समाजशास्त्र का अर्थ (Meaning of Sociology)

समाजशास्त्र का व्यावहारिक रूप उतना ही प्राचीन है जितना कि समाज स्वयं। लेकिन आज हम जिस वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समाजशास्त्र को समझने का प्रयास करते हैं, उसका इतिहास अधिक पुराना नहीं है। अगस्त कॉम्ट (August Comte) वह पहले विद्वान थे जिन्होंने सन् 1838 में सर्वप्रथम 'Sociology' शब्द की रचना की। यही कारण है कि कॉम्ट को 'समाजशास्त्र का जनक' (Father of Sociology) कहा जाता है। शाब्दिक रूप से 'Sociology' शब्द दो विभिन्न स्थानों के शब्दों से मिलकर बना है। पहला शब्द 'Socius' है जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा से है तथा दूसरा शब्द 'Logus' है जो ग्रीक भाषा से लिया गया है। इन शब्दों का अर्थ क्रमशः 'समाज' तथा 'शास्त्र' है। इस प्रकार 'Sociology' का अर्थ समाज के 'विज्ञान' से है। 'Sociology' शब्द का निर्माण दो विभिन्न स्थानों के शब्दों से होने के कारण जे० एस० मिल ने इस नाम को 'अवैध' कहा तथा इसकी जगह एक दूसरे नाम 'Ethology' का प्रस्ताव रखा जिसके अन्दर मानव समूहों के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन किया जा सके। लेकिन मिल के इस प्रस्ताव की कटु आलोचना की गयी। हरबर्ट स्पेन्सर ने 'Sociology' शब्द को ही अधिक उपयुक्त मानते हुए यह निर्णय दिया कि "प्रतीकों की सुविधा उनकी सूचकता, उनकी उत्पत्ति

सम्बन्धों वैधता से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होती है।" इसके बाद से सामाजिक सम्बन्धों का व्यवस्थित अध्ययन करने वाले विज्ञान को 'समाजशास्त्र' के नाम से ही सम्बोधित किया जाने लगा।

समाजशास्त्र के अर्थ को वैज्ञानिक रूप से तभी समझा जा सकता है जबकि सबसे पहले इससे सम्बन्धित दोनों शब्दों 'समाज' और 'शास्त्र' का भली-भाँति स्पष्ट कर लिया जाय। समाज व्यक्तियों का समूह न होकर इससे बिल्कुल भिन्न है। लपियर का कथन है कि "समाज मनुष्यों के एक समूह का नाम नहीं है, बल्कि मनुष्यों के बीच होने वाली अन्तक्रियाओं और इनके प्रतिमानों का हम समाज कहते हैं।" शास्त्र अथवा विज्ञान का अर्थ क्रमबद्ध और व्यवस्थित ज्ञान से है। स्यूबर के अनुसार, "विज्ञान अवलोकन और पुनः अवलोकन के द्वारा विश्व में पायी जाने वाली समानताओं की खोज करने वाली एक पद्धति है। यह एक ऐसी पद्धति है जिसके परिणाम सिद्धान्तों के रूप में प्रस्तुत किये जाते हैं तथा ज्ञान के क्षेत्र में व्यवस्थित रखे जाते हैं। इस प्रकार 'समाज' और 'शास्त्र' शब्दों का अलग-अलग अर्थ समझने के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि सामाजिक सम्बन्धों का व्यवस्थित और क्रमबद्ध अध्ययन करने वाले विज्ञान का नाम ही समाजशास्त्र है।